ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

# स्पिरिचुअल साइंस

# Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष: 14 अंक: 159 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका अगस्त 2021

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

## प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। ( अपने घर बैठे ही )

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

# गुरु चरणामृत

( गुरु गीता )

अज्ञान मूल हरणं, जन्मकर्म निवारणम् ।
ज्ञान वैराग्य सिद्धयर्थं, गुरु पादोदकं पिबेत् ।।१४।।

अर्थ- अज्ञान के मूलोच्छेद के लिये, जन्म और कर्म बन्धन निवारण के लिये, ज्ञान वैराग्य की सिद्धि के लिये गुरुदेव के चरणोदक का पान करना चाहिये।

www.the-comforter.org

गुरोः पादोदकं पीत्वा, गुसरुच्छिष्ट भोजनम् ।
गुरु मूर्तः सदा ध्यानं, गुरु मंत्रं सदा जपेत् ।। १५ ।।

अर्थ- गुरुदेव के चरणोदक का पान, उनके भुक्तशेष अन्न का प्रसाद ग्रहण, और गुरुदेव का ही सदा ध्यान करते हुए उनके द्वारा प्रदत्त मंत्र का जप करना चाहिये।

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

# स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी ( ब्रह्मलीन )

वर्ष: 14 अंक: 159 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका अगस्त 2021

❖ संस्थापक एवं संरक्षक:
पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

❖ सम्पादक:
रामूराम चौधरी

कार्यालय:
स्पिरिचुअल साइंस पत्रिका

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो. बॉक्स नं. - 41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर ( राज. ) भारत
+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com

Head Office
Spiritual Science Magazine:
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Post Box No. - 41
Near Hotel Lariya, Chopasani,
Jodhpur (Raj.) India - 342001
+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com
Website:
www.the-comforter.org

## अनुक्रम

गुरु चरणामृत ....................2
गुरुदेव की दिव्य लेखनी से....................4
समर्पण ....................9
सन् 2002 का पूज्य सद्गुरुदेव का प्रवचन ....................10
गुरुपूर्णिमा महोत्सव की झलकियाँ ....................14
आध्यात्मिक जगत् में गुरु कृपा ....................18
कलियुग में मोक्ष प्राप्ति का पथ ....................19
पृथ्वी लोक, दिव्य लोक की ओर ....................20
साधना विषयक बातें ....................21
अगोराफोबिया ( मानसिक रोग ) से मुक्ति ....................26
Freedom from Agoraphobia ....................28
चेतना ....................30
सिद्ध-योगियों की महिमा ....................33
रूपान्तरण ....................38
हे प्रभु ! हर जगह तेरी ही इच्छा पूरी हो ! ....................42
Future of India ....................43
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से ....................45
योग के आधार ....................47
सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण ....................50
ध्यान की विधि ....................53

# सनातन धर्म के मतानुसार संसार की उत्पत्ति को प्रमाणित करना सम्भव है।

भौतिक विज्ञान की वर्तमान प्रगति ने यथार्थवाद एवं प्रत्यक्षवाद को जितनी तेजी से उकसाया है, आत्मा, परमात्मा, परलोक, पुनर्जन्म एवं कर्म फल जैसे भारतीय दर्शन को उतना ही अमान्य भी किया है। आज हम भारतीयों में भी अपनी संस्कृति, धर्म एवं आध्यात्मिक मान्यताओं में आस्था नहीं रही।

उसका कारण भी विज्ञान की यह तीव्र प्रगति ही है। भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान एक दूसरे के सहयोगी हैं। प्रगति की इस दौड़ में भौतिक विज्ञान अपने जनक आध्यात्मिक विज्ञान से बहुत आगे निकल गया। आध्यात्मिक धर्मगुरुओं को इस तथ्य को स्वीकार करके अपनी कमजोरी को दूर करने के प्रयास करने चाहिए थे, परन्तु उन्होंने यह हिम्मत नहीं दिखाई।

इसके विपरीत सभी धर्मों के धर्मगुरु पलायनवादी हो गये, और दोनों क्षेत्रों को कृत्रिम लक्ष्मण रेखा से दो भागों में विभक्त कर दिया। अपनी कमजोरी को छिपाने के लिए एक के बाद एक झूठ बोलते ही चले गए। इस प्रकार झूठ का अम्बार लगा दिया। एक तरफ झूठ का अम्बार दूसरी तरफ सच्चाई का अम्बार, ऐसी स्थिति में सहयोग की कल्पना करना ही असम्भव है।

सच्चाई के सामने झूठ ठहर ही नहीं सकता, यही कारण है कि आज संसार

www.the-comforter.org

भर के सभी धर्म बहुत ही दयनीय स्थिति में पहुँच गये हैं। जब तक इस सच्चाई को स्वीकार करके, उस क्षेत्र का शुद्धिकरण नहीं कर लिया जाता है, रोग का उपचार असम्भव है। भौतिक विज्ञान के क्षेत्र के लोग इतने सच्चाई प्रिय हैं कि ज्यों ही आध्यात्मिक जगत् ने सच्चाई के रास्ते पर चलकर प्रमाण देना प्रारम्भ किया उन्होंने उनका अनुसरण करना प्रारम्भ कर दिया। जगत् में भौतिक विज्ञान के लोग बहुत ही चेतन हैं, हर सच्चाई को स्वीकार करने में बिल्कुल ही नहीं हिचकिचाते हैं। संसार में जो नरसंहार और अशान्ति फैल रही है, वह इसी असन्तुलित व्यवस्था की देन है। भौतिक विज्ञान की जनक आध्यात्मिक शक्ति ज्यों ही अपने असली स्वरूप में प्रकट हुई कि भौतिक सत्ता उसके सामने नत मस्तक हुई। ज्यों ही संत की यह स्थिति हुई, महर्षि अरविन्द की भविष्यवाणी सत्य हो जायेगी।

संसार में जितने भी भौतिक साधन प्रकट किये जा चुके हैं, उन सब का उपयोग, अगर केवल सृजन के रूप में ही किया जाय तो संसार में घी दूध की नदियाँ बहने में कोई देर नहीं लगेगी। इस प्रकार श्री अरविन्द की भविष्यवाणी सत्य होने में देर नहीं लगेगी। श्री अरविन्द ने कहा था:-"एशिया जगत् हृदय की शान्ति का रखवाला है, यूरोप की पैदा की हुई बीमारियों को ठीक करने वाला है। यूरोप ने भौतिक विज्ञान, नियंत्रित राजनीति, उद्योग, व्यापार आदि में बहुत प्रगति कर ली है। अब भारत का काम शुरू होता है। उसे इन सब चीजों को अध्यात्म शक्ति के अधीन करके धरती पर स्वर्ग बसाना है।" मेरी प्रत्यक्षानुभूतियों के अनुसार आध्यात्मिक जगत् की अनेक समस्याएँ, भौतिक विज्ञान की तरह प्रमाण सहित सुलझाई जा सकती हैं।

www.the-comforter.org

मैं देख रहा हूँ, आध्यात्मिक दृष्टि से जो लोग मुझ से जुड़ रहे हैं, उन्हें सूक्ष्म शरीर, कारण शरीर आदि की प्रत्यक्षानुभूतियाँ हो रही हैं। हिन्दू धर्म का सिद्धान्त, जिसे श्री अरविन्द ने सही प्रमाणित किया है, उसी रास्ते से चलने पर अनेक प्रकार की प्रत्यक्षानुभूतियाँ हो रही हैं। श्री अरविन्द ने कहा था :- ''ईश्वर यदि है तो उनके अस्तित्व को अनुभव करने का, उनका साक्षात् दर्शन प्राप्त करने का कोई न कोई पथ होगा, वह पथ चाहे कितना ही दुर्गम क्यों न हो, उस पथ से जाने का मैंने दृढ़ संकल्प कर लिया हैं। हिन्दू धर्म का कहना है कि अपने शरीर के, अपने भीतर ही वह पथ है, उस पर चलने के नियम भी दिखा दिये हैं। उन सबका पालन करना, मैंने आरम्भ कर दिया है। एक मास के अन्दर ही अनुभव कर सका हूँ कि हिन्दू धर्म की बात झूठी नहीं है, जिन-जिन चिह्नों की बात कही गई है, मैं उन सब की उपलब्धि कर रहा हूँ।''

बिल्कुल ठीक इसी पथ से चलकर मेरे से सम्पर्क करने वाले लोगों को इसी प्रकार की अनेक उपलब्धियाँ हो रही हैं। मूलाधार से अगम लोक तक की सभी अनुभूतियाँ मुझे गुरुदेव के रहते हो चुकी थी, परन्तु उस समय मुझ से जुड़ने वाले किसी को ऐसी अनुभूति नहीं होती थी। 31.12.1983 को गुरुदेव का स्वर्गवास होने के बाद मेरे अन्दर एक विचित्र प्रकार का परिवर्तन आ गया। इसके बाद मुझसे जुड़ने वाले सभी लोगों को वे अनुभूतियाँ अनायास होने लगती हैं, जो मुझे बहुत पहले हो चुकी हैं।

इस विचित्र स्थिति का जब मैंने अन्तर्मुखी होकर पता लगाया तो मालूम हुआ कि यह सारा चमत्कार गुरुदेव के शक्तिपात के कारण हो रहा है। जैसा कि मुझे बताया गया, कोई शक्ति संसार के कल्याण के लिए मेरे

www.the-comforter.org

माध्यम से प्रकट हो रही है।

श्री अरविन्द ने कहा था :- "तुम्हें उठना है ताकि तुम दुनिया को उठा सको। वह ज्ञान जिसे ऋषियों ने पाया था, फिर से आ रहा है, उसे सारे संसार को देना होगा। इस बात को अधिक स्पष्ट करते हुए भी अरविन्द ने कहा है:- "क्रम-विकास में अगला कदम जो मनुष्य को एक उच्चतर और विशालतर चेतना में उठा ले जाय, और उन समस्याओं का हल करना प्रारम्भ कर देगा, जिन समस्याओं ने मनुष्य को तभी से हैरान और परेशान कर रखा है, जब से उसने वैयक्तिक पूर्णता और पूर्ण समाज के विषय में सोचना विचारना शुरू किया था।

इसका प्रारम्भ भारत ही कर सकता है, और यद्यपि इसका क्षेत्र सार्वभौम होगा तथापि केन्द्रीय आन्दोलन भारत ही करेगा।" इस प्रकार की अनुभूतियाँ और पथ प्रदर्शन निरन्तर हो रहा है। मुझे उस परमसत्ता ने बहुत से प्रमाण देकर, अच्छी प्रकार समझा दिया है कि "संसार के हर परिवर्तन और माध्यम की व्यवस्था पूर्व निश्चित है, उसमें रत्ती भर का भी परिवर्तन असम्भव है।"

पश्चिमी जगत् ने जो भौतिक प्रगति की है, उसे जब तक आध्यात्मिक सत्ता के अधीन नहीं कर लिया जाता है, संसार में शान्ति असम्भव है। श्री अरविन्द ने स्पष्ट कहा है :- "हम देशों और जातियों के पृथक् व्यक्तित्व को मिटाना नहीं चाहते, बल्कि उनके बीच से घृणा, द्वेष और गलतफहमियों की बाधाओं को हटाना चाहते हैं।" मुझे संसार भर के देशों में अधिक समय तक कार्य करने की प्रेरणा है, परन्तु पहले कुछ समय तक भारत में ही कार्य करने का आदेश कहा है। श्रीमां के अनुसार "भारत के अन्दर सारे संसार की समस्याएँ केन्द्रीत हो गई हैं और उनके हल होने पर सारे संसार का भार हल्का

www.the-comforter.org

हो जायेगा।''

मैं देख रहा हूँ, इस क्षेत्र में जो व्यक्ति माध्यम होंगे, वे मुझसे जुड़ने आरम्भ हो गये हैं। निरर्थक लोग अगर आ भी जाते हैं तो या तो भयभीत हो कर या विशेष परिस्थितियों वश मुझसे फिर नहीं मिल सकते। प्रभु की यह बड़ी विचित्र लीला है।

कौन व्यक्ति क्या कार्य करेगा, इस सम्बन्ध में भी बहुत ही स्पष्ट दिशा निर्देश मिल रहा है। श्री अरविन्द ने स्पष्ट कहा है :- ''एक संपूर्ण आध्यात्मिक जीवन में हर वस्तु के लिए अवकाश होता है।''। अतः मेरा आध्यात्मिक जीवन कूप मंडूक न होकर, तथ्यों के आधार पर खुली किताब है, जिसे हर मानव पढ़ सकता है। इसमें धर्म और जाति भेद कोई बाधा नहीं है।

–समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग
11 अप्रेल 1988

www.the-comforter.org

# समर्पण

## गुरु केवल समर्पण चाहता है, और गुरु को कुछ नहीं चाहिए।

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

# सन् 2002 के गुरु पूर्णिमा महोत्सव पर पूज्य सद्गुरुदेव सियाग का प्रवचन

गतांक से आगे...

... ऐसे धर्म का ढकोसला करके धर्म को बदनाम कर दिया, पूरे विश्व में। 99 प्रतिशत विश्व का मानव आज विज्ञान से उम्मीद करता है और मैं विज्ञान वालों से ही मिलने निकला हूँ। उनसे कह रहा हूँ कि ये क्योर क्यों हो रहा है, आप अपनी भाषा में बोलो।

तो ये एक विकास है, जिसकी बात केवल हिंदू करता है। स्वर्गस्थ पिता कह कर चुप हो जाते हैं, और स्वर्ग कहाँ है, नहीं मालूम। तो ये क्या है ?, ये आपका, मतलब मानव जाति का विकास है। तो अब जो है, मेरा target west है। और मैं वैदिक दर्शन को मूर्तरूप दे रहा हूँ। हमारे धर्म में ऋग्वेद सबसे पुराना ग्रन्थ है। ऋग्वेद कहता है कि मनुष्य की संरचना सात प्रकार के कोशों से हुई है। सात प्रकार के कोशों से यह शरीर बना है। फिर वो अलग-अलग कोशों की बात करता है। Matter से शुरू करता है। अन्न से बनने वाले कोष-अन्नमय कोष, प्राणमय कोष, मनोमय, विज्ञानमय फिर आनन्दमय, चित्त और सत्। तो आज तक सम्पूर्ण मानव जाति में 4 कोश चेतन हो गए हैं। अन्न, प्राण, मन और विज्ञान। विज्ञान ने बहुत उन्नति कर ली, मगर विज्ञान मानव की समस्याओं का समाधान नहीं कर पा रहा है। असंख्य समस्याएँ हैं जिनका समाधान नहीं हो पा रहा है। मैंने उनको कहा है, विज्ञान के ठेकेदार तो पश्चिम के लोग ही बने हुए है ना तो मैंने कहा तुमने जो करना था कर लिया।

महर्षि अरविंद की भविष्यवाणी है- ''पश्चिम मानवता में जो विकास कर सकता था, कर लिया। आगे जिस विकास की जरूरत है, वो यही देश करेगा, यही धर्म करेगा,यही दर्शन

www.the-comforter.org

करेगा। क्योंकि ईश्वरवाद का जनक तो हमारा देश है। विज्ञानमय कोश के बाद तो तीन कोश बचे हैं -सत्, चित्त, आनंद। जब 7 में से 4 कोश चेतन हो गए, तो बाकी भी चेतन होने का तरीका है, वो तरीका केवल हिंदू जानता है। ये देश जानता है, संसार का कोई देश नहीं जानता। हाइड्रोजन बम चला कर मारना जानते हैं, मोक्ष की बात नहीं समझते। तो अब ये धर्म का संघर्ष शुरू हो गया है। क्यों होगा, ये मैं आपको बताऊँ। अब एक सत्य प्रकट होने वाला है, हो गया है। अब सत्य तो एक ही है। विभिन्न धर्मों के लोग आपस में लड़ रहे हैं। जिन धर्मों का जन्म हिंसा से हुआ है, वो तो अहिंसा की ऐबीसी भी नहीं समझते। इसीलिए ईसाई कह रहे हैं हम बड़े हैं, मुसलमान कह रहे हैं हम बड़े हैं और साथ-साथ निरीश्रवादी और भी अपने आप को बड़ा कह रहे हैं, जो कि ईश्वर की सत्ता में विश्वास ही नहीं रखता ! हम 'अहिंसा परमोधर्म' के सिद्धान्त में विश्वास रखते हैं। ईसाई धर्म बड़ा, मुस्लिम बड़ा, बम चल रहे हैं, through out the world. अब देखिए जितना संघर्ष हो रहा है, एक तरफ मुस्लिम और दूसरी तरफ सारा संसार। कहीं कोई धर्म सामने है, कहीं कोई धर्म सामने है, मगर एक तरफ मुस्लिम और भंयकर नर संहार हो रहे हैं। अब ये धर्म की लड़ाई है, मैं आपको बताऊँ, ये धर्मों का द्वन्द्व है, और अंत में अब फैसला एक होना है कि सच्चा कौन है। जितने भी विश्व के धर्म हैं, उनमें से एक ही सच्चा धर्म निकलेगा। और अब इस दौड़ में हम भी शामिल हैं। क्योंकि हम अहिंसावादी है, इसीलिए हम इस तरह काम नहीं करते। 20 साल से कितना नरसंहार हो रहा है? संसार के किसी आदमी ने कान ही नहीं दिया, क्यों हिंदू आदमी नहीं है क्या? 11 सितम्बर 2001 ने बता दिया कि उग्रवाद क्या है? क्यों? इतने दिनों से जब वो उग्रवाद हमको परेशान कर रहा था तब तो तुमको तकलीफ नहीं हुई। तो अब

www.the-comforter.org

ठीक है, आ जाओ मैंदान में, तुम हम से बड़ा बनना चाहते हो, हम अहिंसा से बड़ा बनना चाहते हैं। लड़ाई हमारी तुम्हारी भी है। हम अहिंसावादी हथियार काम में लाएँगे,तुम अपना हाइड्रोजन बम चलाओ। हम इस रेस से अलग नहीं है, मैं आपको आज बताऊँ। जो कुछ हो रहा है विश्व में, और एक बात और बताऊँ, अशांति इतनी बढ़ गई है कि शांति की बात सोचना ही मृगमरीचिका है। अब तो ये पराकाष्ठा पर पहुँच गई है। अब अहिंसावादी है तो अपने ढंग से पहुँचाएँगे। मगर इस रेस से हम बाहर नहीं है। मैं ये चेलैंज के साथ कह के जा रहा हूँ आपको। अब बड़े-छोटे का फैसला तो मैंदान में होगा

अब वो बीमारी खा रही है लोगों को और हमारा योग जो है,सारी बीमारियों को ठीक करता है।

अब समय जो है, प्रकृति जो है, छलांग मार के चल रही है, घसीट के नहीं चल रही है। लम्बा समय नहीं लगेगा। आगे आने वाली गुरु पूर्णिमा कैसी होगी इस जगह, ये आप देखोगे। ये लाल चमड़ी वाले ( अंग्रेज ) नाक रगड़ेंगे, इस देश में आकर। इजराइल से ज्यादा पवित्र मानेंगे इस देश ( भारत ) को। ये मेरा चैलेंज है। मगर हमारा धर्म, हमारा देश, हमारे ऋषि, हमेशा अहिंसावादी सिद्धांत से पूजे गए हैं, हिंसा से नहीं।

www.the-comforter.org

स्वामी विवेकानन्द ने अमेरिका में कहा कि तुम कहते हो हमारा धर्म बड़ा है,आक्रामक है। क्या कर लिया आपने ? हम जानते हैं आप ईसाई कैसे बने ? तुम्हारे पूर्वजों के सामने दो रास्ते थे, ईसाई बन जाओ नहीं तो मौत को स्वीकार कर लो। उस स्थिति में, उस हालात में तुम ईसाई बने हो, आक्रामक कभी डरता है ? और फिर एक उदाहरण दिया, भारत भूमि से एक चिंगारी उठी ( बुद्ध के बारे में ) और एक रूपया खर्च नहीं हुआ, एक खून की बूँद नहीं गिरी,

और आज हर छठा आदमी बौद्ध है। 100 साल पहले की बात है, स्वामीजी ने 100 साल पहले शिकागो में कहा था। आज विश्व में मानव जाति में हर छठा आदमी बौद्ध है, एक बूँद नहीं गिरी बौद्ध बनने में। और तुम आक्रामक होके क्या कर रहे हो ? तो अब घबरा गए। सितम्बर के बाद घबरा गए। मैं उनको चैलेंज पिछले 10 साल से कर रहा हूँ, मगर किसी के कान पर जूँ नहीं रेंगी,और आए दिन कनवर्ट हो रहे हैं। 10, 20, 50 लोग ईसाई बन रहे है। मैंने कहा हम आपको ईसाई नहीं बनाएँगे, हिन्दू कभी धर्म परिवर्तन की बात नहीं करता है, मनुष्य के रूपातंरण की बात करता है, विकास की बात करता है, चाहे वो मुसलमान है,बौद्ध है, ईसाई है। और जब परिणाम मिलने लग गया ईयाइयों को भी, तो परेशान हो गए। परेशान इसीलिए हो गए कि हिन्दूइज्म जो है रिजल्ट दे रहा है, मैं नहीं दे रहा हूँ, हिन्दू दर्शन दे रहा है। मैं तो आपकी तरह एक साधारण आदमी हूँ, कोई महान आदमी नहीं हूँ।

स्वामी विवेकानन्द जी को पढ़ा तो, गुरु के बिना पार नहीं पड़ेगी, तो गुरु कर लिया। नहीं मालूम था गुरु क्या लेता-देता है ? 2-3 साल बाद समझ में आई। जाते वक्त आदेश कर गए कि आगे का काम तेरे को करना है तो मैं तो रिटार्यमेन्ट लेकर काम कर रहा हूँ भाई। तो ये divine life इस भूमि पर प्रकट हो गई, ये प्रकाश तो विश्व स्तर पर फैलेगा। हिन्दू धर्म विश्व धर्म होगा, मेरा उद्देश्य यही है। मगर वैज्ञानिक ढंग से होगा। तो घंटी बजा दी, अगरबत्ती वाली बात नहीं होगी। आप जिन शक्तियों को बाहर पूजते हो, वो सारी शक्तियाँ आपके अंदर हैं। जब पूरा ब्रह्माण्ड ही अंदर है तो वो देवता भी अंदर ही हैं, उनको अंदर ही चेतन किया जा सकता है।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

# गुरुपूर्णिमा महोत्सव ( जोधपुर एवं अन्य शाखाओं की झलकियाँ )

# विभिन्न शाखाओं में गुरुपूर्णिमा महोत्सव की झलक

कोटा

बाड़मेर

डीडवाना

# विभिन्न शाखाओं में गुरुपूर्णिमा महोत्सव की झलक

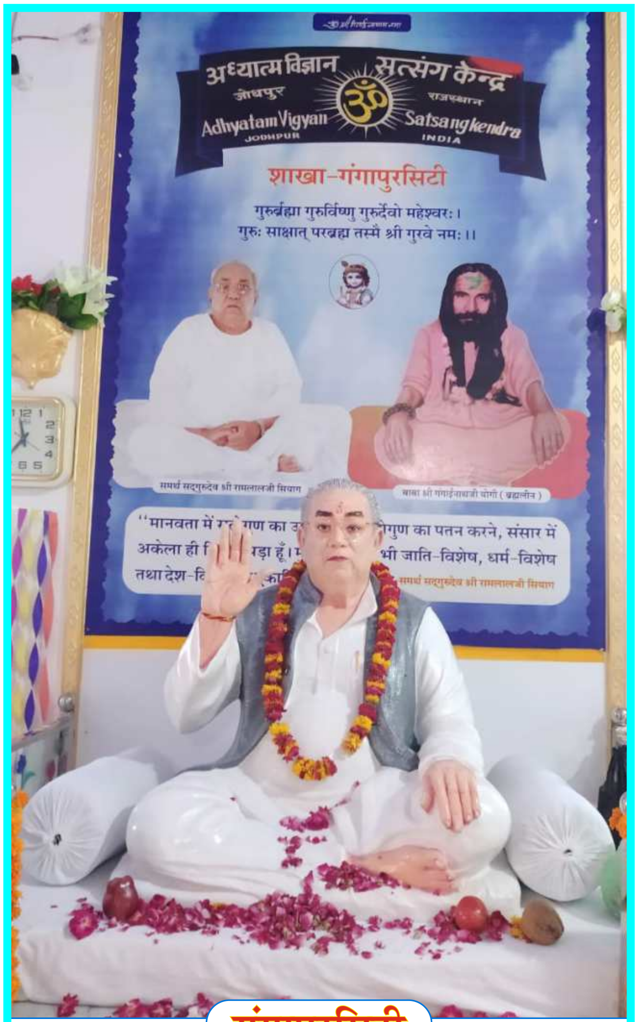

गंगापुरसिटी

हैदराबाद

# विभिन्न शाखाओं में गुरुपूर्णिमा महोत्सव की झलक

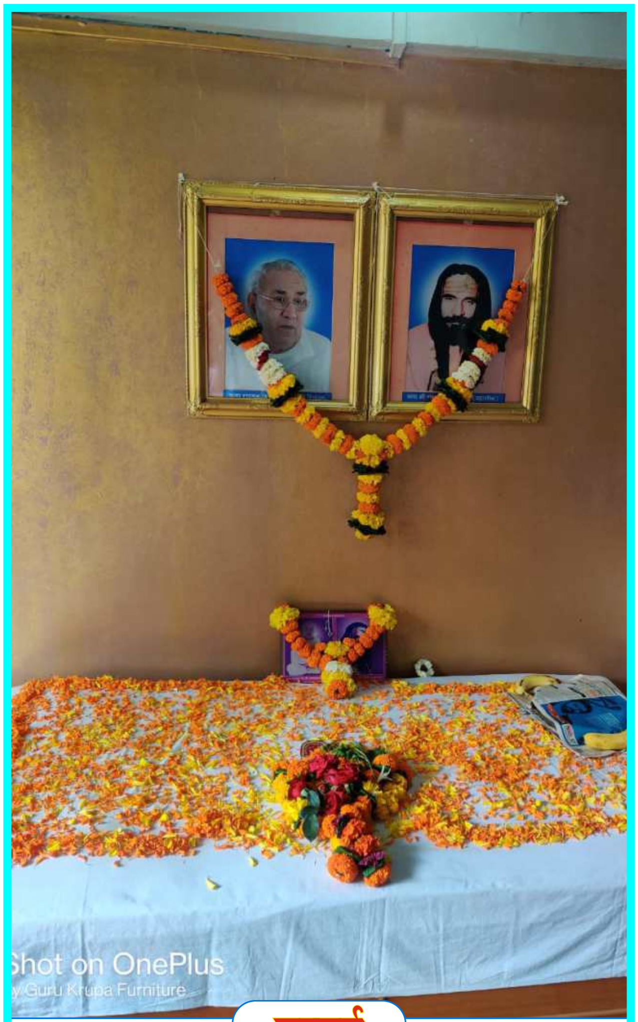


बालेसर

मुम्बई

# आध्यात्मिक जगत् में गुरु कृपा

**गुरु गोविन्द दोऊ खड़े , काके लागूं पाय ।।**
**बलिहारी गुरु आपने , गोविन्द दियो बताय ।।**

मीराबाई ने भी इस सम्बन्ध में कहा है कि "अगर मुझे गुरु गोविन्द दोनों में से एक को चुनने को कहा जाय तो मैं प्रथम गुरु को चुनूंगी। क्योंकि गुरु में गोविन्द से मिलाने की शक्ति है। अगर गुरु को छोड़, गोविन्द को चुनूं और यदि देवयोग से गोविन्द से बिछुड़ जाऊँ तो फिर उससे मिलना सम्भव नहीं।" स्वामी विवेकानन्द जी ने भी इस संदर्भ में कहा है कि "आध्यात्मिक जगत् में गुरु कृपा बिना चलना असम्भव है, परन्तु इस युग में सच्चा गुरु मिलना बहुत कठिन है"।

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

# कलियुग में मोक्ष प्राप्ति का पथ

संसार के सभी जीव धारियों में मनुष्य योनि सर्वोत्तम है। मनुष्य योनि के द्वारा ही जीव मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। यह योनि एक ऐसा संगम है, जहाँ से अगर जीव अच्छे कर्म करता है तो निरन्तर ऊपर उठता हुआ, निश्चित रूप से मोक्ष प्राप्त कर लेता है और यदि इस संगम से मनुष्य बुरे कर्मों द्वारा पतन की ओर बढ़ना प्रारम्भ कर देता है तो फिर उसे चौरासी लाख योनियों के भोग के बाद फिर मनुष्य योनि मिलती है।

इस प्रकार जीव मनुष्य योनि को अगर व्यर्थ में बिता देता है तो समझो कि उसके कर्म फल बहुत बुरे हैं। कर्मों की गति गहन है। ईश्वर के सिवाय इसको समझने की क्षमता किसी में नहीं है। कलियुग में मोक्ष प्राप्ति के दो आसान रास्ते हैं, ( 1 ) ईश्वर के नाम का निरन्तर जप करना ( 2 ) दान।

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

# पृथ्वी लोक, दिव्य लोक की ओर

भौतिक विकासवादी मानते हैं कि मनुष्य का जो वर्तमान देह और रूप है यह विकास की चरम अवस्था है। इससे आगे भी कुछ विकसित हो सकता है यह कल्पना वहाँ नहीं है । श्री अरविन्द के अनुसार ''वर्तमान मनुष्य पार्थिव विकास की मध्यवर्ती भूमिका है, अन्तिम नहीं है।'' जिस प्रकार मनुष्य के सचेतन मन से नीचे निश्चेतना, अवमानस चेतना, अर्धमानस चेतना के स्तर हैं इसी प्रकार उससे ऊपर अतिचेतना के स्तर हैं जिन्हें क्रमशः उच्चतर मन, प्रदीप्त मन, आन्तर्भासिक मन, अधिमन, अतिमन के स्तर तथा दिव्य सत्ता, चेतना और आनन्द कहा गया है ।

www.the-comforter.org

जिस प्रकार प्राण और मन का अवतरण होने और उनकी क्रिया के प्रभाव से यहाँ जड़ तत्त्व से वनस्पति, पशु और मनुष्य का विकास हुआ है, इसी प्रकार अतिमन का अवतरण होने और उसकी क्रिया के प्रभाव से मनुष्य देवता हो सकता है और मानव-जाति, देव-जाति के रूप में परिणत हो सकती है, पृथ्वी-लोक दिव्य-लोक हो सकता है ।

संदर्भः- श्री अरविन्द
'दिव्य जीवन' द्वितीय भाग

गतांक से आगे...

# साधना विषयक बातें

योगमार्ग पर आराधनाशील साधक को विभिन्न प्रकार के पहलुओं का सामना करना होता है। कभी उतार, कभी चढ़ाव, मानसिक उद्वेग, कभी हँसी-खुशी, कभी बेबसी, उदासीनता, काम, क्रोध और न जाने इस योग मार्ग की यात्रा में कितने ही पड़ाव और हर मोड़ पर चौराहा और थोड़ी देर बाद दूसरे मोड़ पर फिर चौराहे आते हैं, जिससे साधक दिग्भ्रमित हो जाता है यदि उस पर सद्गुरुदेव की असीम कृपा बराबर न बनी रहे तो।

मानव से अतिमानत्व की यात्रा में, दिव्य रूपान्तरण के लिए सफलता तभी संभव है जब साधक अपने सद्गुरु के बताए पथ पर निष्कपट भाव से, गाढ़ी प्रीति रखते हुए पूर्ण समर्पण भाव से आराधना करें। श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि श्री अरविन्द घोष, श्रीमां सहित कई प्राचीन योगियों के समय, उनके शिष्यों से उनका जो वार्तालाप हुआ है, उसको समय समय पर इस शीर्षक के अंतर्गत देंगे जिससे आराधनाशील साधकों को इस मार्ग में सहायता मिल सके।

www.the-comforter.org

प्रश्नः- एक साधिका ने स्वप्न में देखा कि श्रीमां उसका बड़ी कठोरता से तिरस्कार कर रही हैं। किंतु उस साधिका को विश्वास है कि कोई विरोधी शक्ति श्रीमां का रूप धरकर उसे विचलित और उद्विग्न कर रही है।

उत्तरः- ये सब झूठे सपने आते हैं, प्राण की अवचेतना से-जाग्रत् अवस्था में उनका जोर नहीं चलता। अतः नींद में अवचेतन अवस्था में मिथ्या रूप धर यदि विचलित कर सकें। अच्छी अवस्था को रौंद सकें-विरोधी शक्ति की यही चेष्टा रहती है। इस तरह के स्वप्न का विश्वास न करना, जागने पर झाड़ देना।

यह कामशक्ति की कठिनाई आश्रम में अधिकांश साधकों की

प्रधान बाधा है। एकमात्र गुरु की शक्ति ही इससे पिंड छुड़ा सकती है-उस शक्ति के प्रति अपने को खुला रखो और समस्त मन-प्राण में उससे छुटकारे के लिये अभीप्सा जगाओ।

यह दुर्बलता आयी है सोना, खाना छोड़ देने से। इस तरह की न खाने की इच्छा को भगा देना होगा-जबरदस्ती करके खाना होगा और धीरे-धीरे खाना बढ़ाना होगा जब तक पहले की तरह न हो जाओ। दर्द आदि सब कमजोरी के कारण हैं। अच्छी तरह खाने से नींद भी आती है। ...असली बात तो यह है कि बीमार होते ही तुम बड़ी चंचल हो जाती हो, इसीलिये यह सब होता है। यदि शांत रहो तो थोड़े में और जल्दी ही बीमारी भाग जाती है। और फिर तुम दवा भी खाना नहीं चाहतीं, यह और एक मुसीबत है-दवा लेने से भी जल्दी मुक्ति मिल जाती है। यदि दवा नहीं खाना चाहती तो खूब शांत, सचेतन रहना चाहिये। जो हो, इस समय खाने, सोने और शांत रह विश्राम करने से शरीर की स्वस्थ अवस्था शीघ्र ही लौट आयेगी।

इस साधना में प्राण और शरीर को तुच्छ समझ फेंक देने की इच्छा एक बड़ी भारी भूल है। यह प्राणहीन अशरीरी योग साधना नहीं है। प्राण और शरीर हैं शक्ति के यन्त्र, वासस्थान और मन्दिर। इन्हें स्वच्छ रखना होता है, सबल सजग रखना होता है। खाने, सोने इत्यादि में लापरवाही नहीं करते, जिससे शरीर भला-चंगा रहे वही करना चाहिये। और यह बात सदा याद रखो कि शरीर है साधना का साधन। उसे सम्मान देना होगा, स्वस्थ अवस्था में रखना होगा।

प्रश्नः- मैं दूर-दूर से कुछ भी देखना, अनुभव करना नहीं चाहती। मां का शिशु, क्यों मां के पास रहकर भी दूरत्व का अनुभव करेगा ?

उत्तरः- इस बात की चिन्ता करना

www.the-comforter.org

छोड़ दो-पहले भीतर सब कुछ प्रतिष्ठित करो, बाहर का सब कुछ बाद में होगा।

प्रश्नः- आजकल मैं कभी-कभी साधारण चेतना और आमोद-प्रमोद में जा पड़ने की भूल कर बैठती हूँ, सांसारिक विषयों के बारे में चिंतन और आलोचना करती हूँ।

उत्तरः-शक्ति की चेतना तुम्हारे अंदर जितना-जितना स्थान बनाती जायेगी और सारे आधार पर अधिकार करती जायेगी उतना-उतना ही वे चीजें बहिष्कृत और रूपांतरित होती जायेंगी। तब तक स्थिर, धीर भाव से साधना करती चलो।

प्रश्नः- चिट्ठी लिखने बैठते ही कितनी मिथ्या कल्पना-जल्पना और कामनाएँ घिर रही हैं...

उत्तरः- कठिनाइयों को अपनी न मान, उनसे अलग होकर उन्हें देखो और ये मेरी नहीं हैं कहकर अस्वीकार करो। इससे उन्हें अतिक्रम करना बहुत आसान हो जाता है।

प्रश्नः- मेरे मन में ये विचार उठ रहे हैं कि तुम मेरे से नाराज और असंतुष्ट हो इसीलिये तुम मेरी ओर देखकर मुस्कराती नहीं, देखकर भी देखती नहीं। यह भी मन में आता है कि मैं बहुत खराब हूँ, तुम्हारे योग के लिये अनुपयुक्त हूं।

उत्तरः- ये सब हैं बाहरी प्राण-प्रकृति के सुझाव तुम्हें निराशा की ओर ठेलने के लिये तथा बाधाएँ सामने खड़ी करने के लिये-इन सब कल्पनाओं को तूल नहीं देते।

प्रश्नः- अचानक देववाणी की तरह किसी ने मुझसे कहा, 'तुम्हारी यह बाधा अंतिम बाधा है, इसको जीत लेने पर और बाधा नहीं, तुम्हारी स्थूल चेतना का परिवर्तन और रूपांतर करने के लिये यह बाधा आयी है। संपूर्ण रूपांतर कर शक्तिमय होकर रहना होगा।' क्या यह सब सच है, श्रीमां?

www.the-comforter.org

उत्तरः- जिस दिन चैत्य हर समय जागरूक रहेगा, सम्मुख रहेगा, उस दिन यह वाणी सत्य सिद्ध होगी। अभी उसी की तैयारी चल रही है।

ध्यान करने के लिये प्रयास करने की जरूरत नहीं-स्वतः जो हो जाये वही यथेष्ट है।

प्रश्नः- किसी ने जैसे मुझसे कहा, 'तुम्हें और कुछ करने की जरूरत नहीं, किसी तरफ ताकने- झांकने की और ध्यान देने की जरूरत नहीं। सिर्फ शक्ति के प्रति अपना पूर्ण समर्पण कर दो और उन्हें ही निरंतर गुहारती चलो। शक्ति सब कर देंगी।

उत्तरः- यह बात ठीक है। चैत्य की ही वाणी है। जहाँ शक्ति के विरुद्ध या शक्ति द्वारा की गयी व्यवस्था के विरुद्ध साधक में अहंकार उदित होता है, वहाँ संघर्ष होगा ही-उस सब में मत उलझना, शक्ति जो करेगी वही होगा।

प्रश्नः- बाहरी सत्ता पर कब और कैसे तुम्हारा राज्य स्थापित होगा ?

उत्तरः- कब होगा यह तो अभी नहीं कह सकता...लेकिन भीतर की चेतना जब शक्तिमय हो जायेगी तो उसके बल से बाह्य प्रकृति भी बदलेगी, यही कहा जा सकता है।

मैंने तो तुम्हें बार-बार कहा है कि जैसा तुम्हारा स्वभाव है और जैसी तुममें बाधाएँ हैं-प्रायः सभी में वैसी मानुषी स्वभाव और बाधाएँ होती हैं-साधकों की कठिनाइयों में थोड़ा हेर-फेर हो सकता है किंतु मूलतः सभी मनुष्य हैं, बाह्य प्रकृति अभी भी अशुद्ध और असिद्ध है।

प्रश्नः- किसी चीज की माला-सी

www.the-comforter.org

मेरे गले में झूल रही है, उसमें से तुम्हारा आलोक विकीर्ण होकर तुम्हारे शिशु का सब कुछ आलोकित कर रहा है और तुम से ओतप्रोत कर दे रहा है।

उत्तरः- गले में का अर्थ है मनबुद्धि का बहिर्गामी अंश ( physical mind ), यहाँ जो काम हो रहा है और उस काम का जो फल मिल रहा है वह समझ में आ रहा है।

यदि दुर्बलता महसूस होती हो तो धीरे-धीरे शक्ति को शरीर में उतार लाओ-बल मिलेगा।

प्रश्नः- तुम्हारी अपेक्षा लोगों की बातों में ध्यान ज्यादा जाता है। बार-बार मन संसार की ओर दौड़ना चाहता है। मेरी प्रकृति बहुत चंचल और अचेतन है। मन और प्राण की चेतना में असंख्य अदिव्य चीजें आ घुसी हैं।

उत्तरः- इसलिये कि तुम अपनी शांत साधना की गति नहीं रख सकीं, और इसलिये कि बाधाएँ आने पर व्याकुल हो अशांति और चंचलता को निमंत्रण दिया। यह जो बाहर से आनेवाले दर्शनार्थी अपने साथ बाहर का वातावरण लाते हैं, उससे आश्रम के वातावरण में एक कोलाहल और अस्त-व्यस्तता आ गयी थी। उसी का प्रभाव तुम्हारे ऊपर भी पड़ा। स्थिर हो जाओ, अशांति को स्थान न दे दृढ़ भाव से शक्ति को बार-बार पुकार कर, वही पुरानी अच्छी अवस्था वापिस ले आओ।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

# अगोराफोबिया ( मानसिक रोग ) से मुक्ति

मैं, राजकुमार आसवानी, (पिता का नाम- नारायण आसवानी) बहुत समय से एक प्रकार के मानसिक रोग से पीड़ित था जिसे अगोराफोबिया कहते हैं। इसके लिए मेडिकल सांइस में कोई ईलाज नहीं है। मैं दस साल से इस रोग से पीड़ित था। मुझे बिना कारण बहुत डर लगता था, दिल की धड़कने बहुत तेज हो जाती थी, असुरक्षित महसुस करता था और मृत्यु का भय लगा रहता था। फिर मुझे डिप्रेशन (मानसिक अवसाद) हो गया। इसके साथ-साथ मुझे भीड़ में भी भय लगता था इसलिए मैंने भीड़-भाड़ वाली जगहों पर जाना छोड़ दिया। मेरी हालत को देखकर मेरे परिवार वाले मुझे बीकानेर के सभी अच्छे डॉक्टरों के पास लेकर गए पर मेरी हालत में कोई सुधार नहीं हुआ। मेरे सभी प्रकार के मेडिकल टेस्ट किए गए पर सारी रिपोर्ट् नॉर्मल आयी।

हमने सब उम्मीदें छोड़ दी और मैं जीवन से हताश हो गया। एक बार मैंने अखबार में एक लेख पढ़ा जिसमें मेरे जैसे ही लक्षण दिए थे। उसको पढ़ने के बाद मैंने उस लेख के लेखक डॉक्टर प्रदीप, जो की जयपुर में मनोचिकित्सक हैं, से सम्पर्क किया। उनके पास मेरा इलाज एक साल चला। मैं हर महीने उनकी क्लीनिक पर जाता था। एक साल बाद उन्होंने मुझे दवाईयों की मात्रा को आधा करने को कहा पर आधा करते ही सारे

www.the-comforter.org

लक्षण फिर से वापस आ गए। डॉक्टर ने फिर से दवाईयों की मात्रा बढ़ा दी। मैं बहुत चिंतित रहने लगा क्योंकि इन दवाईयों के बहुत गंभीर साइड इफेक्ट होते हैं।

लोग कहते हैं कि भगवान बहुत दयालु है और सब की पुकार सुनता है और एक दिन भगवान ने मेरी प्रार्थना भी सुन ली। मेरे एक मित्र ने मुझे गुरुदेव के बारे में बताया। मैंने यह साधना करने का मन बना लिया क्योंकि करने से कोई नुकसान तो नहीं होता। मैं गुरुदेव के एक शिष्य के घर प्रतिदिन जाकर गुरुदेव की तस्वीर पर ध्यान करने लगा। इस ध्यान से मुझे बहुत संतुष्टि मिली और मुझे इसमें आनन्द आने लगा। फिर मैंने महसुस किया कि मेरी तबीयत दिन-प्रतिदिन पहले से अच्छी होती जा रही है। दो हफ्ते गुरुदेव की तस्वीर पर ध्यान करने से, मेरी सारी समस्याएँ गायब हो गई। फिर मैं जोधपुर आया और गुरुदेव से दीक्षा ली। उसके अगले हफ्ते मेरे परिवार के सदस्यों ने भी दीक्षा ली।

आज गुरुदेव की अहेतु की कृपा से मैं बिलकुल स्वस्थ जीवन जी रहा हूँ। मैं उन सभी लोगों से जो किसी भी प्रकार की शारीरिक या मानसिक परेशानी से गुजर रहे हैं विनती करता हूँ कि वो शक्तिपात दीक्षा लेकर संजीवनी मंत्र का जाप और गुरुदेव की तस्वीर पर ध्यान जरूर करें। इससे उनके सभी कष्ट दूर हो जाएँगे। मैं तहेदिल से गुरुदेव के चरणों में प्रणाम करता हूँ।

नाम- राजकुमार आसवानी
बीकानेर, राजस्थान

www.the-comforter.org

# Freedom from Agoraphobia

I, Rajkumar Aswani s/o Sri Narayan Das Aswani, was suffering from an incurable psychological disease, known as Agoraphobia (A kind of panic disorder). There is no proper cure for this in medical science. I got afflicted with this disorder ten years ago and as a result, I developed symptoms like extreme fear without reason, increased heart beat, excess perspiration, extreme insecurity, fear of losing mental balance and fear of sudden death etc. Slowly I got inflicted with depression also. I developed fear of crowds and would avoid going to crowded places.

Because of my condition, my family members got concerned and took me to almost all good doctors of Bikaner but there was no improvement in my condition. I was checked for all disorders and all medical tests were conducted on me but all reports indicated that I was normal. I was checked thrice for Thyroid within two years but every time the reports indicated normal functioning.

www.the-comforter.org

We all lost hope and I lost the purpose of life. I was deep into inferiority complex and there was no hope in sight.

Once I read in a newspaper about a disorder, which had similar symptoms like me. I contacted the writer of that article, Dr Pradeep, a Jaipur based Psychiatrist.

Then started a long process of medication that continued for a year. Every month I used to visit him. One day he advised me to

cut down my dose of medicines to half. But when I did that, all the symptoms reappeared and I contacted him, who then advised me to keep taking the full dose for a long period since my case was severe. I got very concerned because I was aware of the side effects of all those drugs.

People say that God is kind and hears everybody's prayer and one day he heard mine as well. One of my friends told me about Gurudev Siyag. I decided to give it a try since there was no harm. I started going regularly to the residence of one of Gurudev's disciples for daily meditation on Gurudev's photograph. Regular meditation gave me a unique kind of satisfaction and I started enjoying it. I also realized that I was feeling better day by day. Surprisingly within two weeks of regular meditation on Gurudev's photograph only, I got cured of all my problems.

Then I travelled alone to Jodhpur and received initiation from Gurudev. Next week, my family also received initiation. It is due to an unmotivated kindness of my spiritual master Gurudev Siyag that today I am living a normal life.

I request everyone who is suffering from any kind of incurable physical or psychological disorder to take Shaktipat Initiation from Gurudev and chant the Sanjeevani mantra and meditate on Gurudev's photo to be free from it.

I express my heartfelt gratefulness to my omnipotent Gurudev.

**- Rajkumar Aswani**
**Bikaner, Rajasthan**

www.the-comforter.org

गतांक से आगे....

# चेतना

–श्री अरविन्द

अब हमें कुछ-कुछ मालूम पड़ने लगा कि चेतना क्या है और यह भी महसूस होने लगा कि वह ब्रह्माण्ड में सब जगह है, उन सभी स्तरों पर है जिनके समरूप हमारे अपने केन्द्र हैं, परन्तु अभी तक हमें 'अपनी' चेतना नहीं मिली।

शायद इसी कारण से कि वह ऐसी चीज नहीं है जो बनी-बनायी 'मिलती हो', बल्कि उसे आग की तरह दहकाया जाता है। जीवन के कुछ असामान्य क्षणों में सभी को अपने अन्दर मानो एक भाव-सा अनुभव हुआ होगा, एक तरह की आन्तरिक प्रेरणा या सक्रिय शक्ति- सी जिसको शब्दों में समझा नहीं सकते, न ही उसके वहाँ होने का कोई कारण है क्योंकि वह शून्य में से उमड़ती है, अकारण ही उसकी उत्पत्ति होती है, और जरूरत की तरह लाग-लपेट से खाली है, ज्वाला की तरह स्पष्ट है। हमारा समूचा बचपन साक्षी है उस विशुद्ध उत्साह का, वियोग की उस व्याकुलता का, जिसका कोई कारण नहीं दिखता।

पर शीघ्र ही हम इस किशोर अवस्था को पार कर जाते हैं और जैसे मन अन्य सब हथिया लेता है वैसे ही उस शक्ति पर भी अपना अधिकार जमा लेता है और आदर्शों के वागाडम्बर से उसे आवृत्त कर देता है; वह उसे किसी कार्य में या किसी व्यवसाय अथवा धर्म में लगा देता है। अथवा प्राण उसे पकड़ लेता है और यदि किसी जोखिम में उसे न

www.the-comforter.org

फंसाये या शासन, विजय और स्वत्व जमाने का काम उससे न ले तो उसे न्यूनाधिक उदार भावनाओं से पोत डालता है। कभी-कभी यह शक्तिऔर भी नीचे फँस जाती है। और कभी-कभी सब कुछ डूब जाता है।

भारग्रस्त एक छोटी छाया को छोड़ कर अन्य कुछ भी शेष नहीं रहता। परन्तु जब साधक अपने मानस को नीरव बना चुका और विचारों के जाल में फंस जाने का उसे खतरा नहीं रहा, जब वह अपने प्राण को शान्त कर चुका और हर समय भावावेशों तथा इच्छाओं की भारी आंधी उसे उड़ाये नहीं रहती, तब अपने इस परिष्कृत अस्तित्व में वह फिर एक नई खोज करता है, मानो एक नवीन तरुणावस्था हो, स्वच्छन्द अवस्था के लिए एक नई प्रेरणा हो।

जैसे-जैसे उसके 'सक्रिय ध्यानों', उसकी अभीप्सा द्वारा, आवश्यकता द्वारा, उसकी एकाग्रता बढ़ती जायेगी, उसे महसूस होगा कि उसके अंदर की प्रेरणा जीवित होती जा रही है।

ऋग्वेद में कहा है, 'वह विशाल बनकर, जो जीवित है उसे बाहर निकाल लाती है; जो मृत था उसे पुनः जाग्रत करती है।' (१.११३.८) वह उत्तरोत्तर व्यक्तपुष्टता, अधिकाधिक ठोस बल और सर्वोपरि एक स्वच्छन्दता प्राप्त कर रही है मानो साधक के व्यक्तित्व के भीतर एक और शक्ति और व्यक्तित्व हो।

शुरू में, अपनी निश्चेष्ट ध्यानावस्थिति में (अर्थात् अपने घर में, शान्त, आँखें मूंदे ध्यान की स्थिति में) साधक देखेगा कि उसके अन्दर वाली इस शक्ति की गतिविधि है, संहति है, घटती-बढ़ती तीव्रता है और वह उसके अन्दर ऐसे चढ़ती उतरती है मानो उसका अपना कोई स्थायित्व न

www.the-comforter.org

हो। बिल्कुल सजीव तत्त्व के हिलने-डुलने जैसा ही लगता है। अन्दर की यह गतिविधि इतनी प्रबल भी हो जा सकती है कि जब यह शक्ति उतरे तो देह को झुका डाले और जब चढ़े तो सीधा करके पीछे की तरफ खींच देवे। हमारी सक्रिय ध्यानावस्थिति में अर्थात् साधारण बाह्य जीवन में, यह आन्तरिक शक्ति ज्यादा धीमी पड़ जायेगी और पीछे की ओर एक दबे हुए मन्द स्पन्दन की तरह लगेगी, यह हम पहले ही देख चुके हैं।

इसके अलावा, हमें एहसास होगा कि यह खाली एक अवैयक्तिक शक्ति नहीं है बल्कि एक उपस्थिति है, हमारे अन्दर एक अस्तित्व है जो मानो हमारा एक सहारा हो, कोई चीज जो हमें सुदृढ़ता, एक टेक सी प्रदान करती हो और दुनिया के प्रति एक शान्त दृष्टि देती हो।

यह छोटी-सी चीज जो धड़कती है अन्दर पाकर मनुष्य अभेद्य बन जाता है और फिर कभी अकेला नहीं रहता। वह सब समय सर्वत्र साथ मौजूद है।

वह हमें प्यार करती है, हमारे समीप है और सशक्त है।और अजीब बात यह है कि जब हम इसे जान लें तब सब जगह, सब जीवों में, सब वस्तुओं में, वह एक ही चीज है; उससे सीधा सम्पर्क जोड़ा जा सकता है मानो वह सचमुच समान ही हो, दीवार कहीं है ही नहीं।

तब हम एक ऐसी चीज अपने अन्दर स्पर्श कर गये जो सार्वभौमिक शक्तियों के हाथ में खिलौना नहीं है, "मैं सोचता हूँ अतः मेरा अस्तित्व है" ऐसी निरी क्षुद्र और रूक्ष धारणा भी नहीं है, बल्कि हमारी सत्ता का मूलभूत तथ्य है, हम, सचमुच हम, वह वास्तकि केन्द्र है, अनुराग और अस्तित्व, चेतना और शक्ति हैं।'

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

# सिद्ध–योगियों की महिमा

**साधकों के ज्ञान बोध के लिए स्वामी शिवोमतीर्थ महाराज की पुस्तक 'अंतिम रचना' के लेख क्रमशः शुरू किये हैं, आशा है साधकों की आराधना में सहायक सिद्ध होंगे। उनको प्राचीन काल की आराधना की कठिनाईयों के बारे में जानकारी मिलेगी, कितनी कठिन आराधना थी और सद्गुरुदेव सियाग ने अति सहज में सिद्धयोग को धरती पर मानव मात्र के कल्याण के लिए उतारा है।**

तब वह पुरोहित को साथ लेकर स्वयं लल को जाकर मिला तथा उसे मनाने का प्रयत्न करने लगा।

लल का पति–'अब बहुत हो गया। अब घर लौट चलो। सूर्य के प्रकाश के समान कोई प्रकाश नहीं, गंगा के समान कोई पवित्र नहीं, भाई के समान कोई परिजन नहीं तथा पत्नी के समान कोई सुख नहीं। घर से बाहर रहकर तुम मुझे उस सुख से वंचित कर रही हो। पत्नी होने के नाते, मेरे प्रति तुम्हारा भी कुछ कर्तव्य है।'

जैसी किसी की चित्त की स्थिति होती है, वैसी ही वह बात करता है, क्योंकि वैसी ही उसकी समझ होती है। पुरोहित साथ था तो उसे भी अपनी समझ के अनुसार कुछ कहना ही था। उसने कहा, "नेत्र– प्रकाश के समान कोई प्रकाश नहीं, स्वावलम्बन के समान कोई तीर्थ नहीं, गरम कम्बल के समान कोई सुख नहीं तथा धन के समान कोई परिजन नहीं। तुम्हारे चले आने से मानो, यह सभी कुछ लुप्त हो गया है। तुम्हारे वहाँ होने से ही तीर्थ, धन, प्रकाश तथा सुख सभी कुछ था। अब तो घर भूतवासा के समान है। अब हठ त्याग दो। जो कुछ हुआ उसे भूल जाओ एवं लौटकर अपना घर संभालो।"

लेकिन लल की चित भूमिका,

www.the-comforter.org

स्थिति तथा दृष्टि उन दोनों से एकदम विपरीत थी। वह हर एक बात का निर्णय आध्यात्मिक आधार पर लेती थी। उसके भौतिक-कामनाओं का लेशमात्र भी कोई स्थान नहीं था।वह कर्तव्य-अकर्तव्य से ऊपर उठ चुकी थी, अतः उसकी समझ की पहुँच भी उन दोनों से भिन्न थी। उसने कहा, 'ब्रह्म ज्ञान के समान कोई प्रकाश नहीं, भगवद रति के समान कोई तीर्थ नहीं, प्रभु के समान कोई परिजन नहीं तथा ईश्वर भय के समान कोई सुख नहीं। अतः आप भी उसी ईश्वर से प्रीति करो। उसी का भय हृदय में धारण करो।वही तुम्हारा सच्चा सुहृद् है।मेरा तथा आप का इतना ही लेन-देन था।

जहाँ-जैसी हूँ, ठीक हूँ।जिस रास्ते पर चल रही हूँ, मेरे लिए वही ठीक है। सबका अपना-अपना प्रारब्ध है, अपना-अपना लक्ष्य है।

लल के पति ने एक बार और उसे मनाने का प्रयत्न किया, 'देखो ! मैं मानता हूँ कि मेरे से भूलें हुई हैं तथा मैं तुम्हें समझ नहीं सका था।किन्तु अब मेरी आँखे खुल गई हैं। मुझे एक अवसर और देकर तो देखो। जो अपनी भूल स्वीकार कर लेता है, समझो उसको,उसकी भूल का दण्ड मिल गया। इसलिए अब घर लौट चलो।'

लल- 'आप अभी तक भी मुझे कहाँ समझ पा रहे हैं।आप कहते हैं कि अब आपकी आँखें खुल गई हैं जब कि वास्तविकता यह है कि आपने न पहले कभी मेरी मानसिक अवस्था को समझा, न अभी जान पाए हैं।यदि यथार्थ स्थिति आपके समक्ष रख दी जाए तो आपका सिर शर्म से झुक जाए तथा आप उठकर यहाँ से चले जाऐगें।' लल का पति- वह स्थिति क्या है ?।

इस पर लल सोच में पड़ गई कि वास्तविक स्थिति पर पड़ा आवरण उतार देना चाहिए कि नहीं ? फिर उसने

www.the-comforter.org

विचार किया कि संभवतः इसके कल्याण का समय भी आ गया है । वस्तु स्थिति जानकर इसका मन भी पलट जाए तो अच्छा है। उसने रहस्य को प्रकट करने का मन बना लिया।

लल– 'मैं जो कुछ कहने जा रही हूँ, उसके गवाह यह पुरोहित जी हैं। अभी तक आपको तथा आपके घरवालों को मैंने यह बात प्रकट नहीं की है तथा न इन पुरोहित जी ने। इसलिए आप मेरी उदासीनता का कारण समझ नहीं पाए। कुछ जन्म पूर्व मैं आपकी माता थी। आपके पिता मेरे पति थे किन्तु इस जन्म में आकर आप मेरे पति हो गए तथा आपके पिता मेरे ससुर । आपमें मैं एक साथ पुत्र तथा पति का स्वरूप देखती थी। मुझे इस बात का ज्ञान था अतः दोनों संबंधों में से एक को चुनने का कर्तव्य भी मेरा था, पर मैं यह निर्णय अन्त तक नहीं कर पाई।

अतः मैंने दोनों संबंधों को त्याग देने का निश्चय किया। इस बीच पानी के घड़े वाली घटना घट गई। आप क्रोध के इतने वशीभूत हो गए थे कि आपने घड़ा फोड़ दिया। घड़ा टूट जाने पर पानी सिर पर स्थिर बना रहा तो मेरी एक महात्मा के रूप में प्रसिद्धि फैलने लगी। साधन-मार्ग में प्रसिद्धि को बड़ा भारी अवरोध माना जाता है अतः मैंने घर छोड़ दिया तथा लोगों से मिलना बंद कर दिया।

पूर्व जन्म में जब मैं आपकी माता थी तो मरने से पहले मैंने पुरोहित जी को बता दिया था तथा इस जन्म में, पिछले जन्म की बात याद कराई थी। आप पुरोहित जी से सारी बात पूछ-समझ सकते हैं। क्यों पुरोहित जी !'

पुरोहित जी ने स्वीकृति में सिर हिला दिया। लल का पति मौन साधे सब सुन रहा था। उसे यह सब बातें बड़ी आश्चर्यजनक लग रही थीं। वह लल में अपनी माता की कल्पना करने लगा।

www.the-comforter.org

लल- 'यदि आपको अभी तक भी मेरी बात में कुछ संशय बना हो तो आपको सारा दृश्य प्रत्यक्ष अनुभव करा देती हूँ। अपनी आँखें बंद करके बैठ जाइए।'

लल का पति आलती-पालती मारकर, आँखे बंद करके बैठ गया। लल भी उसके सामने ध्यान में बैठ गई। थोड़ी देर में दोनों का ध्यान लग गया।

लल के पति को अपने ध्यान की अवस्था में पूर्व की सभी घटनाएं प्रत्यक्ष हो उठीं। उसे अपनी शैशव अवस्था दिखाई दी। वह लल की गोद में अठखेलियाँ कर रहा था। अपने पिता की युवावस्था देखी। उसे अपने पिता तथा लल पति-पत्नी के रूप में दिखाई दिए। पुरोहित जी के साथ हुई बातें उसने प्रत्यक्ष देखी-सुनी। उसने लल को मरते भी देखा।

ध्यान में यह दृश्य प्रत्यक्ष देखकर, उसे अपने-आप पर ग्लानि हो उठी। माता से पत्नी के संबंध की अपेक्षा ! छी !छी ! घोर अनर्थ ! महापाप ! वह उठकर बाहर निकल गया तथा एक पत्थर पर बैठ कर जोर-जोर से रोने लगा। यह देखकर पुरोहित घबराने लगा तो लल ने सांत्वना दी कि थोड़ी ही देर में सभी ठीक हो जाएगा। अपना मन हलका कर लेने दीजिए। थोड़ी देर में वह लौटकर अंदर आया तथा लल से बोला, 'आप तो पति तथा पुत्र की दुविधा में रहे, किसी एक संबंध का चुनाव नहीं कर सके किन्तु मैंने माता तथा पत्नी में से एक संबंध को चुन लिया है ! आज के पश्चात्

www.the-comforter.org

आप मेरी माता हैं।' यह कहकर उसने लल के चरण स्पर्श किए। लल ने भी भाव-विभोर होकर वात्सल्ययुक्त आशीर्वाद दिया। पुरोहित जी आश्चर्य-चकित सब देखते रहे।

इस प्रकार की अनुभूतियों को स्वयं अनुभव करना तथा अन्यों को अनुभव कराना, दोनों भिन्न स्थितियाँ हैं। स्वयं अनुभव करने के लिए चित्त की जिस सूक्ष्मता, निर्मलता एवं एकाग्रता की आवश्यकता है, उससे कहीं अधिक आवश्यकता किसी अन्य को अनुभव कराने के लिए है। योगी का अपना मन, अपने नियंत्रण में होता है। जहां चाहे, और जब तक चाहे, कहीं भी एकाग्र कर सकता है। किन्तु किसी दूसरे को ऐसा अनुभव कराने के लिए, उसके अनियंत्रित तथा चंचल मन को अपने वश में कर उसे एकाग्र करना पड़ता है जिसके लिए पर्याप्त सामर्थ्य की आवश्यकता होती है। सामान्य योगी के लिए यह संभव नहीं होता कि किसी दूसरे को भी यह अनुभव करा सके। फिर यह भी है कि योगी दूसरे को कोई विशेष दृश्य दिखाना चाहता है, इसके लिए किसी भी विषय पर उसकी मानसिक पकड़ मजबूत होनी चाहिए।

इसके लिए योगी को अपना मन दूसरे के मन के साथ मिलाकर एक करना होता है। जिससे दोनों मन एक होकर एक ही बात सुन सकें, एक ही दृश्य देख सकें। दृश्य योगी देखता है, उसके साथ दूसरा भी उसका लाभ उठा लेता है। दूसरा यह समझता है कि वही देख रहा है तथा उसी के अन्तर में यह अनुभव हो रहे हैं। यह दूसरे की अंगुली पकड़ कर चलने के समान है। चलता योगी है, रास्ता उसको ज्ञात है, दूसरा केवल उसके साथ चलता जाता है, किन्तु समझता यह है कि वह चल रहा है।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

# रूपान्तरण (Transformation)

"आवश्यक है कि अच्छी हो या बुरी, स्वयं परिपाटी ही बदली जाये, क्योंकि अच्छे के साथ अनिवार्य रूप से बुरा जुड़ा हुआ है। सब चमत्कार केवल हमारी दीनता का उलटा अथवा कहना चाहिए सीधा पहलू भर है। पर जरूरत हमें एक सुधरे-सँवरे संसार की नहीं, नये संसार की है। एक 'उच्च प्रकार का समाहित वातावरण हमें नहीं चाहिए; बल्कि यदि असंगत न रहे तो हम कह सकते हैं कि निम्न प्रकार के समाहित वातावरण की जरूरत है, यहाँ सभी कुछ पुण्यधाम हो जाना चाहिए।"

साधक की ये दो मुख्य समस्याएँ अब हमारे सामने हैं - देहकोशाणुओं के अंदर अनश्वरता का बोध जाग्रत करना जो अभी हमारी आत्मा में और मानस में भी विद्यमान है, और अवचेतन का पूर्णपरिष्कार। देह के अंदर अग्नि की प्रगति, लगता है, इन्हीं दोनों प्रश्नों पर निर्भर कर रही है।

अपने अनुभव से हम जानते हैं कि अनश्वरता का प्रश्न सदा से सच्चाई के प्रश्न के साथ जुड़ा हुआ है। जो सत्य है वह अमर है। यदि हम पूर्णरूपेण सत्य हुए होते तो हम ऊपर से नीचे तक, पूर्णतया अमर हुए होते। अभी तो हमारी आत्मा के सिवाय और कुछ है नहीं जो अमर हो, क्योंकि एक वही हमारे अंदर परम आत्मन् का सत्य है। वही एक जन्म से दूसरे जन्म में जाती है, विकास और प्रगति करती है, अधिकाधिक सचेतन बनती है । मानस भी ज्योंही उस केन्द्रासीन दिव्य सत्य के चारों ओर संगठित हो जाता है, जब परम सत्य का ही चिंतन करता है, परम सत्य की ही कामना करता है, वह भी अमर हो जाता है - पूर्वजन्मों के अपने विचारों को हम अच्छी तरह

www.the-comforter.org

पहचान सकते हैं। इसी तरह के आध्यात्मिक सत्य के साथ, पर्याप्त मेल हो जाने पर प्राण भी अमर बनने योग्य है।

मनुष्य एक नये आयाम में प्रवेश करता है जिससे, लगता है, वह सहस्रों वर्षों से परिचित है। किन्तु ऐसा बहुत

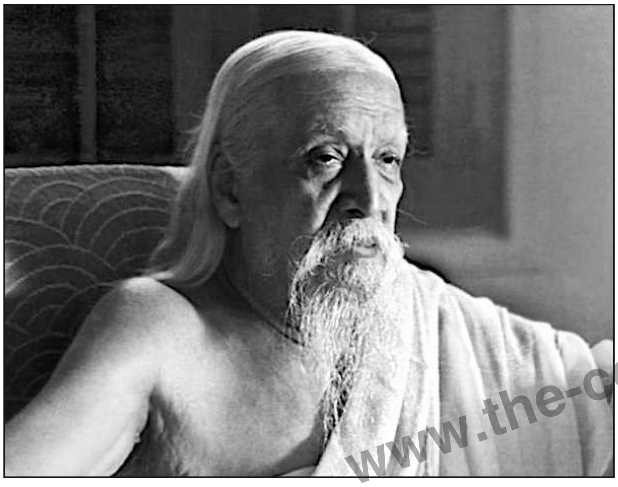

कम होता है-सामान्यतः हमारी जीवन-शक्ति सत्य जीवन निर्माण करने के संकल्प की अपेक्षा तरह-तरह के आमोद-प्रमोद में बहने अधिक लगी रहती है। चेतना-सोपान पर ज्यों-ज्यों हम नीचे उतरते हैं, त्यों-त्यों झूठ घना होता जाता है और सब उतना ही मृत्यु का ग्रास बनता है, जो कि बिल्कुल भाविक है, क्योंकि विनाश झूठ का स्वधर्म है। अब जबकि प्राण में ही पहले काफी अंधकार घुसा हुआ है, देह भी अनेक झूठों से भरी पड़ी है। जरा और व्याधि उसके सबसे अधिक स्पष्ट झूठों में से हैं। जो सत्यस्वरूप है वह जराग्रस्त, विरूप, जर्जर, रुग्ण कैसे हो सकता है? दिव्य सत्य से प्रकाश की किरणें निकलती हैं; वह सुंदर, भास्वर और अमर है, यह स्पष्ट है। भगवान् का सत्य अजेय है। जरा और मृत्यु हमें सत्य की कमी के कारण ही धर दबोचती हैं। वैसे हमें यह मानना पड़ेगा कि बहुत देर तक मृत्यु सही विवेक का सबूत देती है - ''यदि कहीं हमारे बाबू रामलाल जी अमर हो जायें तो अमरता का दुर्व्यय ही हो।'' अंततः हमें यही कहना पड़ता है कि मृत्यु परम

www.the-comforter.org

सत्य का निष्ठावान रक्षक है – यह देखकर आश्चर्य होता है कि किस तरह, हर जगह और समय, वस्तुओं के दो पहलू रहते हैं; एक ओर से देखें तो संघर्ष, संग्राम, निराकरण आवश्यक हो जाता है; दूसरी ओर से देखें तो जितना धन्यवाद करें थोड़ा, सब स्वीकार ही स्वीकार करते जाने को मन होता है। और मनुष्य में दोनों की क्षमता होनी जरूरी है। जरा, व्याधि, अचेतनता – इन सब 'देह के झूठों' को खदेड़ने की बारी तो सबसे पीछे आयेगी, जब ऊपर के स्तरों, मानस और प्राण का रूपान्तर हो लेगा, और सत्ता के शेष भाग भागवत सत्य में निवास करने लगेंगे, परम सत्य में प्रतिष्ठित हो जायेंगे। यह समझना सरासर झूठ है कि बीच की दूसरी सब सीढ़ियाँ पार करने से पहले किसी के लिए अतिमानसिक साधना आरंभ करना संभव हो। हम यह जानते हैं कि निम्नता का स्पर्श कर सकने के लिए उच्चतम तक चढ़ना जरूरी होता है।

यदि मानसिक रूपांतर की पहली शर्त है नीरवता और प्राणिक रूपांतर की शांति तो दैहिक रूपांतर की आधारशिला है निश्चलता, जो कि बाह्य नहीं, आन्तरिक निश्चलता है, कोशाणु-चैतन्य में गति का नितांत अभाव है। मानस की नीरवता और प्राण की शांति में हम संसार के अनगिनत स्पंदों को पहचान चुके हैं, उन सब प्रभावों को जो छिपे-छिपे हमें कार्य, बोध और चिंतन के लिए प्रेरित किया करते हैं। उसी तरह अब दैहिक चेतना की निश्चलता में हमें स्पंदों की एक विचित्र भीड़ दिखाई देने लगी और यह पता चल गया कि हम कौन-सी धातु के बने हुए हैं। कोशाणुरूप में हम एक बड़ी

www.the-comforter.org

खलबली के बीच रह रहे हैं। वह संवेदनाओं का एक भँवर है, जिसमें कोई शक्तिशाली हैं, कोई सुहावनी, कोई क्लेशजनक, कोई तीखी, कहीं पैने शूल ऊपर उड़े जा रहे हैं तो कहीं नीचे तीर छूट रहे हैं। और यह चक्र बंद हुआ नहीं कि वेदना का एक गर्त सा प्रतीत होने लगता है, जिसे जिस-किसी तरह अन्य संवेदनाओं से, नित नयी संवेदनाओं से भरना जरूरी है। हिले-जुलें नहीं तो हमें जीवन का ही भान नहीं होता। अतः कार्य आरंभ करने से पहले हमें इस महान् विप्लव में पूर्ण निश्चलता लानी होगी, आत्मा की नहीं, कोशाणुओं की साम्यावस्था होनी चाहिए। सत्य का कार्य तभी आरंभ हो सकेगा। इस कोशाणुसाम्य में हमारी देह एक स्वच्छ पात्र की तरह होगी जिसके अंदर कुछ तनिक भी हिलेगा तो हम उसे देख सकेंगे यानी उसे पकड़ना, उसे वश में करना हमारे लिए संभव हो जायेगा। उस स्वच्छता में व्याधि और विच्छेद की, झूठ की सब शक्तियाँ, अवचेतन की विकृतियाँ, विरूपताएँ, और उनका सारा घृणित परिवार कुलबुल करते साफ नजर आयेंगे और हम उन्हें चुन-चुन कर पकड़ सकेंगे। निश्चय ही अग्निज्वर का कारण इतना कोशाणुओं के अनुकूलन की असाध्यता नहीं, जितना हमारे अंधकारों का विरोध है। एकमात्र इस पावनी निश्चलता में ही सामर्थ्य है कि मैदान साफ करे और अग्नि की महती गति को, जो बिजली का सा असर रखती है, बाहर निकाले, फिर भी देह उसके साथ लगकर गति न पकड़े, आतंकित और उत्तप्त न हो।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

# हे प्रभु ! हर जगह तेरी ही इच्छा पूरी हो !

हे प्रभो ! शाश्वत गुरु तू जिसे न तो हम नाम दे सकते हैं न समझ पाते हैं, परन्तु जिसे हर क्षण अधिकाधिक अनुभव करना चाहते हैं।

हमारी बुद्धि को प्रबुद्ध कर, हमारे हृदयों को प्रकाशित कर हमारी चेतना का रूपांतर कर, वर दे कि हर व्यक्ति सच्चे जीवन की ओर जागे, अहंकार और उसके पिछलग्गू दुःख और संताप से भागे और तेरे दिव्य और शुद्ध प्रेम में शरण ले जो समस्त शांति और समस्त सुख का मूल स्रोत है।

मेरा हृदय तुझसे इतना भरा हुआ है कि ऐसा लगता है वह अनंतता में फैल रहा है और मेरी बुद्धि तेरी उपस्थिति से पूर्णतया आलोकित होकर शुद्धतम हीरे की तरह चमक रही है। तू अद्भुत जादूगर है जो सभी चीजों को रूपांतरित करता है, कुरूपता में से सुंदरता निकालता है, अँधेरे में से प्रकाश को लाता है, कीचड़ में से निर्मल जल, अज्ञान में से ज्ञान और अहंकार में से भलाई निकाल लाता है।

तेरे अंदर, तेरे द्वारा, तेरे लिए हम जीते हैं और तेरा विधान हमारे जीवन का परम स्वामी है। वर दे कि हर जगह तेरी इच्छा पूरी हो, तेरी शांति समस्त भू पर राज्य करे।

**–श्री माँ 19 मार्च 1914, प्रार्थना और ध्यान पुस्तक से**

www.the-comforter.org

# Future of India

India remained a slave for centuries which led to the settling of darkness on this holy land. Except for 'Vedantis', followers of all the religions of the world have until now developed till 'Dwait-Bhav' (Duality). Today in India also 'Dwait-Bhav'(State of duality) is popular. According to Philosophy, centuries back, India had developed to 'Advait Bhav'(Non- dualistic state ). This fact also gets verified as being true by our religious scriptures.

There is an absolute principle of nature- Rise and Fall. There is a limit to downfall as well. India has reached that limit.

In this relation Maharishi Sri Aurobindo has said, "The sun of India's destiny has risen. Now it is moving up. The time period of downfall is over. Now the morning is approaching and once the light spreads then night can never set in. The morning will soon set in and the sun will be seen rising over the horizon. The sun of India's destiny will rise and fill the entire India with its light. Not only India, Asia and the entire world as well will be filled with its light. Passing of every second and every moment is bringing it near the day of revolution and splendour" the permission for which has been granted by GOD.

The time period of downfall is

www.the-comforter.org

over. New India is rising. It is becoming conscious and is getting ready to occupy its due place in the league of nations.

The way Maharishi Aurobindo has closely seen India and the entire world through insight, few people have seen that. Shri Aurobindo has foretold that, "Future mankind will have divine body." This means that mankind according to the principle of 'Advaitwaad'(Non-dualism), with gradual development will reach its final stage of evolution.

Forced by the conditions, I started the 'Anushthan' of 'Gayatri mantra' (chanting of the mantra one lakh twenty-five thousand times in a prescribed manner) from the beginning of 'Navratri' of winters in the year 1968. I completed the chanting of the mantra one lakh twenty-five thousand times along with giving the 'aahuti' in the sacrificial fire after each chant. I got the 'Gayatri Mantra Siddhi' in the beginning of the year 1969.

Because of this transformation within me, the divine change in mankind is coming through me. Seeing this divine transformation in mankind in future, Shri Maharishi Aurobindo had predicted, "Future mankind will have divine body"

Since this development is universal, therefore the entire world will be affected by it.

-Samarth Gurudev Shri Ramlal Ji Siyag.

www.the-comforter.org

# सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

Vikrami—28 Sawan 2045 Saka—24 Sawan 1910
Samvat—3 Sawan Sudi 2045 Hijri—1 Muharram 1409

सोमवार १५ अगस्त सावन सु. ३ वि. २८ सावन सं. २०४५

अभिमत्त लक्ष का भूत है

प्रभु की लीला विचित्र है।

ईसाइयों की प्रथम St. John द्वारा लिखी "जीवन का मार्ग" सन् 1984 में अनायास पढ़ने को मिली। परन्तु बाइबिल में वर्णित बातों की प्रत्यक्षानुभूतियाँ तथा साक्षात्कार बहुत पहले से प्रारम्भ हो गये थे। The New testament तो सन् 1986 के अन्तिम दिनों में मिला। इसके बाद सभी तथ्यों का, जो बाइबिल में दो हजार साल पहिले लिख दिया गया था, कार्यरूप में मेरे माध्यम से परिणित होते हुए, परमसत्ता द्वारा दिखाया गया। बड़ी विचित्र बात है। पश्चिमी जगत को स्वीकार करने में भारी मानसिक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। परन्तु सोने को जंग नहीं लगता। आखिर सच्चाई को स्वीकार करना ही पड़ेगा। आइन्सटीन ने जो सिद्धान्त प्रतिपादित किया है कि अनादिकाल से बोले गये शब्द ब्रह्माण्ड में आज भी मौजूद हैं। उसे वैज्ञानिक उपकरणों से सुने जा सकते हैं। मैं कहता हूँ शब्द ही नहीं सभी घटनाओं के दृश्य भी चाहे वे भूतकाल की हैं या भविष्य में घटने वाली हैं, देखे सुने जा सकते हैं। मैं इसे प्रमाणित करने की स्थिति में हूँ। यीशु-मूसा तो करते हुए थे।

मैं ने एक बार एक दृश्य देखा। मैं किसी सागर को पार करके उसके किनारे पहुँचा। उस सागर में बहुत ऊँची २ लहरें उठ रही थीं। परन्तु उससे बाहर निकलने में मैं अपने आप को पूर्ण असमर्थ महसूस कर रहा था, क्यों कि बाहर निकलने के लिए जिन चट्टानों पर चढ़ना था वह इतनी ऊँची थी कि मेरे हाथ की पकड़ से बाहर थी। अचानक क्या देखता हूँ कि एक बहुत ही बलिष्ठ व्यक्ति ठीक मेरे ऊपर वाली चट्टान पर आकर खड़ा हो गया और झुक कर अपना दाहिना हाथ मेरी तरफ (नीचे की ओर) बढ़ा दिया। मैं ने उसका दाहिना हाथ मेरे दाहिने हाथ से पकड़ लिया और उसके सहारे झूलने लगा। मैं ने सोचा वह मुझे खींच कर निकाल लेगा, परन्तु उसने एक इंच भी मुझे ऊपर नहीं खींचा, परन्तु मेरा हाथ मजबूती से पकड़े रहा, छोड़ा नहीं। मैं बहुत परेशान हुआ, सोचा क्या किया जाय। फिर मैं ने मेरे दाहिने हाथ की ताकत के सहारे मेरे शरीर को संभाला

www.the-comforter.org

# सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

Samvat 4 Sawan Sudi 2045 Hijri 2 Muharram 1409

मंगलवार १६ अगस्त सावन सुदी ४ वि. २६ सावन सं. २०४५

सच्चा साथी ही मनुष्य का सुख है

और मेरे बांये पैर को ऊपर किनारे की तरफ बढ़ाया। संयोग से मेरे बांए पैर का अंगूठा ऊपर की चट्टान के ऊपर टिक गया और उस पर शरीर का वजन संभालते हुए दाहिने हाथ की शक्ति से शरीर को ऊपर ढकेलते हुए बाहर आ गया। पहले मुझे बिलकुल भी उम्मीद नहीं थी कि मुझे बाहर निकलने में सफलता मिल जायेगी क्योंकि ऊपर खड़ा अति बलिष्ठ व्यक्ति मुझे बाहर बिलकुल नहीं खींच रहा था। अतः जब मैं बाहर निकल कर उसके दाहिनी तरफ खड़ा हो गया तो मुझे भारी प्रसन्नता हुई। इसके तत्काल बाद वह दृश्य खत्म हो गया। और सभी बातें बाइबिल से मिल कर वैसे ही सही प्रमाणित हो रही हैं जो उसमें लिखा है। एक दिन ऊपर के दृश्य की बात याद आ गई और सोचा उक्त दृश्य का अर्थ आज तक समझ में नहीं आया। इस पर मुझे प्रेरितों के काम (the acts of the apostles) के 2:33 के देखने की प्रेरणा मिली। उसे पढ़कर मुझे भारी अचम्भा हुआ। सोचा परमात्मा किस प्रकार जीवन में होने वाली घटनाओं को निश्चित समय पर अपने द्वारा निश्चित किये हुए तरीके से समझा रहा है। मानवीय बुद्धि जिस बात की कभी कल्पना भी नहीं कर सकती, ईश्वर क्षण भर में उसे सम्भव करके कार्य रूप में परिणित कर देता है। मुझे भारी अचम्भा हो रहा है। एक बार मैंने ईश्वर से प्रार्थना की थी कि मुझ जैसे नाचीज व्यक्ति से ये असम्भव कार्य क्यों करा रहे हो। कृपया किसी योग्य और उपयुक्त व्यक्ति को यह कार्य सौंपो। जिसकी संसार में प्रतिष्ठा और सामाजिक मान्यता हो। इस पर मुझे उत्तर मिला कि "यह सब तुझे ही करना है, और किसी को नहीं सौंपा जा सकता"। अतः अदृश्य सत्ता के इशारे पर संसार में निकल पड़ा हूँ। मुझे न सफलता से खुशी होती है न असफलता से दुःख। क्यों कि मैं तो उस सत्ता का दास हूँ केवल मजदूरी का अधिकारी हूँ, घाटे, नफे से मुझे कोई वास्ता नहीं। रामलाल

8-9-88

गतांक से आगे...

कठिनाई में...

# योग के आधार

–महर्षि श्री अरविन्द

केवल तपस्या के लिये तपस्या करना इस योग का आदर्श नहीं है, परंतु आण के क्षेत्र में आत्मसंयम करना तथा स्थूल भौतिक स्तर में समुचित सुव्यवस्था बनाये रखना, इस योग का एक प्रधान अंग है–और हमारे उद्देश्य की सिद्धि के लिये सच्चे संयम की शिथिलता और कमी की तपस्या की साधना कहीं अधिक अच्छी है। स्थूल भौतिक स्तर, प्राप्त करने का मतलब यह नहीं है कि हम स्थूल पदार्थों को प्रचुर मात्रा में प्राप्त करें और फिर खुले दिल उनका अपव्यय करें अथवा जितनी तेजी से वे आयें उतनी ही तेजी से या उससे भी अधिक तेजी से उन्हें बरबाद करें। प्रभुत्व का मतलब यह भी है कि चीजों का सावधानी के साथ उचित उपयोग किया जाये और उनका उपयोग करते हुए अपने ऊपर संयम भी रखा जाये।

अगर तुम योग करना चाहते हो तो तुम्हें सभी बातों में, चाहे वे छोटी हों या बड़ी, अधिकाधिक यौगिक भाव धारण करते जाना चाहिये। हमारे मार्ग में कामना–वासना का जहां तक संबंध है, उस यौगिक भाव का स्वरूप यह नहीं है कि कामनाओं का जबर्दस्ती निग्रह किया जाये, बल्कि यह है कि उनके प्रति अनासक्ति और समता का भाव रखा जाये। कामनाओं का जबर्दस्ती निग्रह करना (उपवास भी इसी श्रेणी में शामिल है) और उनका स्वच्छंद भोग करना दोनों एक ही कोटि की चीजें हैं; दोनों ही अवस्थाओं में कामना बनी रहती है; एक में तो वह भोग के द्वारा पुष्ट होती है और दूसरी में वह निग्रह के कारण उत्तेजित अवस्था में छिपी पड़ी रहती है। जब साधक इनसे पीछे हटकर खड़ा होता है, अपने–आपको निम्नतर प्राण से अलग कर लेता है, उसकी कामनाओं और क्षुधाओं को

www.the-comforter.org

अपना समझना अस्वीकार करता है और उनके विषय में अपनी चेतना में एक प्रकार की पूर्ण समता और स्थिरता बनाये रखने का अभ्यास करता है केवल तभी निम्न प्राण भी धीरे-धीरे शुद्ध होता है और स्वयं भी सम और स्थिर हो जाता है। कामना की प्रत्येक लहर को, जैसे ही वह आती है वैसे ही, तुम्हें देखना चाहिये और ठीक वैसे ही शांति और अविचल अनासक्ति के साथ देखना चाहिये जैसे कि तुम अपने से बाहर होनेवाली किसी घटना को देखत हो और फिर उसे अपनी चेतना से बहिष्कृत कर बाहर चले जाने देना चाहिए तथा उसके स्थान में क्रमशः सत्य-क्रिया, सत्य-चेतना स्थापित करनी चाहिये।

आहार के लिये आसक्ति का होना, उसके लिये लोभ और बेचैनी का होना, जीवन में उसे आवश्यकता से अधिक महत्त्व की चीज बना देना-यह सब यौगिक भाव के विपरीत है। इस बात का ज्ञान होना कोई बुरी बात नहीं है कि अमुक चीज रसनेंद्रिय के लिये सुखदायी है; केवल उस वस्तु के लिये न तो कामना होनी चाहिये न बेचैनी, न तो उसके प्राप्त होने पर उल्लास होना चाहिये न उसके न मिलने पर अप्रसन्नता या खेद ही होना चाहिये। जब आहार स्वादिष्ट न हो अथवा प्रचुर मात्रा में प्राप्त न हो तो उससे विक्षुब्ध या असंतुष्ट न हो साधक को सम और स्थिर बने रहना चाहिये-जितनी आवश्यकता हो बस उतनी ही निश्चित मात्रा में भोजन करना चाहिये, उससे न तो कम न अधिक। भोजन के लिये न तो उत्सुकता ही होनी चाहिये और न अरुचि।

भोजन के विषय में ही बराबर सोचते रहना और इस तरह मन को कष्ट देते रहना भोजन की आसिक्त से छुटकारा पाने का एकदम गलत रास्ता है। भोजन के प्रश्न को, बस, जीवन में

www.the-comforter.org

उसका जो उचित स्थान है, वहां एक छोटे-से कोने में, रख दो और उसके ऊपर मन को एकाग्र न कर अन्य विषयों पर एकाग्र करो।

आहार के प्रश्न को लेकर अपने मन को व्यग्र मत करो। उचित मात्रा में (न बहुत अधिक न बहुत कम) आहार ग्रहण करो, उसके लिये न तो लोभ हो, न घृणा, बस शरीर की रक्षा के लिये श्रीमां के दिये हुए एक साधन के रूप में उचित भाव के साथ, अपने अंदर विद्यमान भगवान् को समर्पित करते हुए उसे ग्रहण करो; फिर उससे तामसिकता नहीं उत्पन्न होगी।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

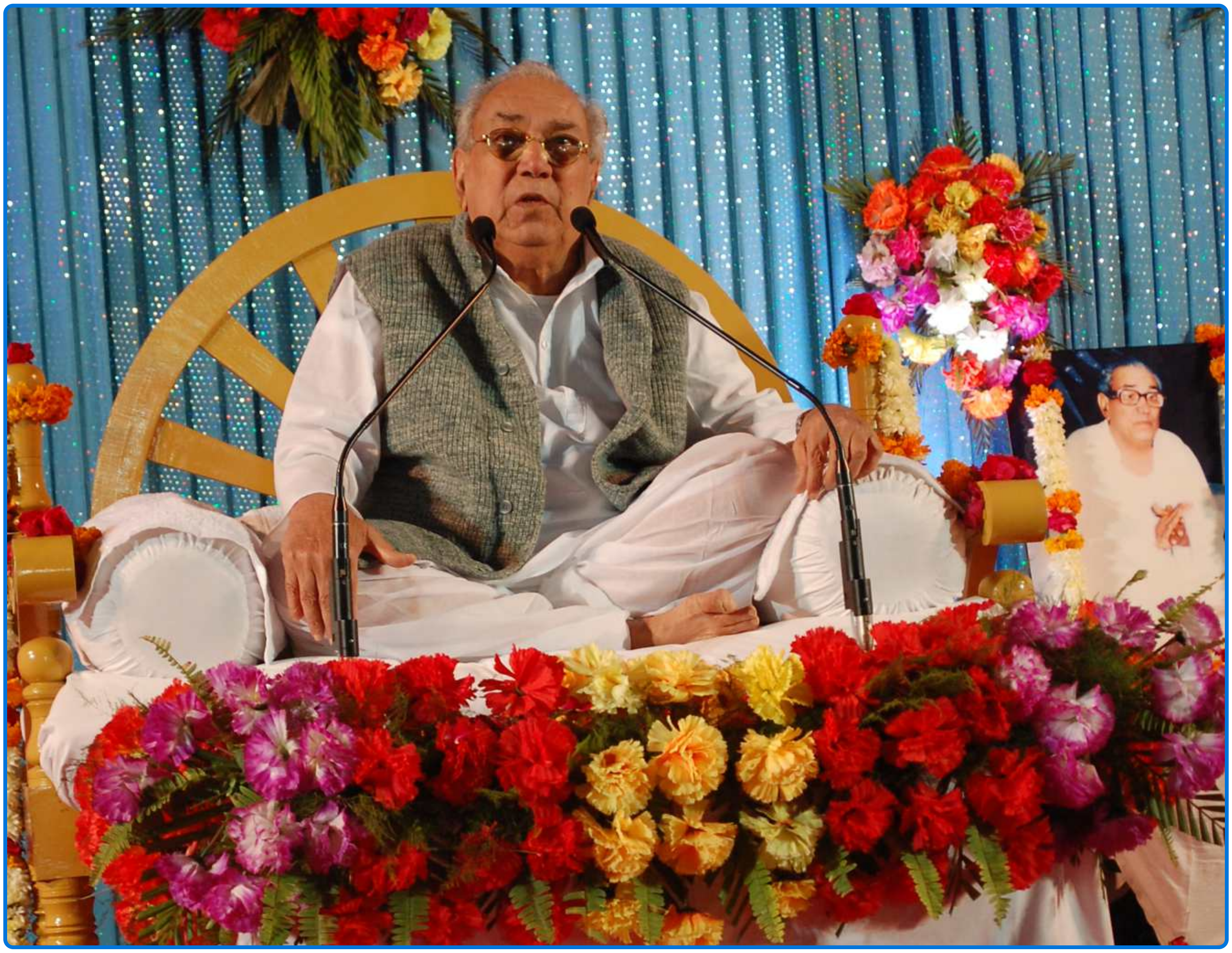

# सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला सहस्रार में स्थित है और उसकी शक्ति मूलाधार में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है।

उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके चेतन होकर उर्ध्वगमन करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही 'मोक्ष' है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक मृगमरीचिका ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा

का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित परमसत्ता की पराशक्ति है अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित उस परम तत्त्व की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, एक समय में, मात्र एक ही व्यक्ति के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह सार्वभौम सत्ता है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग द्वारा शक्तिपात दीक्षा से साधक की कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है। अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार गुरुदेव इस दिव्य ज्ञान को विश्व भर में निःशुल्क बाँट रहे हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो उर्ध्वगमन करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है और ध्यान के समय विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ स्वयं करवाती हैं। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो स्वयं करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके

www.the-comforter.org

आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् परशिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी श्री मत्स्येन्द्र नाथ जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों- आधि दैहिक, आधि भौतिक व आधि दैविक (Physical, Mental & Spiritual) का शमन (नाश) करता है। इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व विज्ञान सम्बधित समस्या नहीं है, जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो। अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है। सदगुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से यह मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।

## सिद्धयोग से लाभ-

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद, उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं संजीवनी मंत्र के जाप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

. सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसे:-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी., दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसे:-तनाव, पागलपन, उन्माद, भय, चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के नशों जैसे:- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।

. विद्यार्थियों की एकाग्रता एवं याद्दाश्त में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।

. आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।

. गृहस्थ जीवन में रहते हुए 'भोग एवं मोक्ष' दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।

. ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार संभव।

www.the-comforter.org

## क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव ( मानव ) पर प्रभाव डाल सकता है ?

सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

## प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ? ध्यान करके देखें।

### शक्तिपात-दीक्षा

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें साधक को सघन मंत्र जाप व ध्यान करना होता है।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामालाल जी सियाग एक सिद्धगुरु हैं जो शक्तिपात दीक्षा से, अपनी दिव्य शक्ति को संजीवनी मंत्र द्वारा शिष्य में संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति, कुण्डलिनी को जाग्रत कर देते हैं।

गुरुदेव सियाग का संजीवनी मंत्र, एक चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।

गुरुदेव की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें – 07533006009

( सभी जाति एवं धर्मों के जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को सस्नेह निमंत्रण )

www.the-comforter.org

### ध्यान की विधि

- आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से, खुली आँखों से देखें।
- फिर गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करूण प्रार्थना करें।
- अब आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर ( जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं ) केन्द्रित करते हुए, संजीवनी मंत्र का मानसिक जाप ( बिना होंठ-जीभ हिलाए ) करते रहें।
- इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया ( आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम ) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान की अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी।
- इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रूप से ( केवल 15 मिनट ) ध्यान करते रहें।
- नाम जप ही ध्यान की चाबी है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय जपें।

### Method of Meditation

- Sit in a comfortable position and look at Gurudev's image for a while.
- Then pray to Gurudev to help you meditate for 15 minutes.
- Now close your eyes and while focussing on Gurudev's image at the centre of your forehead, mentally chant (without moving your lips and tongue) the Sanjeevani Mantra given by Gurudev.
- During this time if you undergo automatic yogic movements, then let them happen. Don't try to stop them. After requested time is over, they will stop.
- Meditate in this way for 15 minutes, in the morning and evening, on an empty stomach.
- For profound meditation, chant the mantra as much as possible while performing your daily activities.

**मुख्यालयः– अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर**

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर ( राज. ) 342001 सम्पर्क : +91-2912753699, +91-9784742595

Email: avsk@the-comforter.org, Website: www.the-comforter.org

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365*POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2020 & VALID UP TO 31.12.2022

# मंत्र जाप से विघ्नों का अभाव होता है।

——— अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें ———
Spiritual Science . स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी पोस्ट बॉक्स नं. 41, जोधपुर ( राज. ) 342001
फोन: + 91 291 2753699, मो. : +91 9784742595 वेबसाइट: www.the-comforter.org

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान्________________________________________

स्वत्वाधिकारी: अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर ( राजस्थान ) से प्रकाशित।